आपके धर्मविज्ञान का निर्माण

अध्याय 3

प्रकाशन पर भरोसा करना

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय....1
प्रकाशन को खोजना....1
  सामान्य प्रकाशन....2
    माध्यम....2
    विषय सूची....3
  विशेष प्रकाशन....4
  अन्तर संबंध....5
    दोहराव....5
    आवश्यकता....6
प्रकाशन को समझना....8
  पाप की रूकावट....8
    सामान्य प्रकाशन....9
  विशेष प्रकाशन....9
  पवित्र आत्मा का प्रदीप्तीकरण....10
    विशेष प्रकाशन....10
    सामान्य प्रकाशन....11
  परिणाम....12
आत्मविश्वास को विकसित करना....14
  श्रेणीगत गुणवत्ता....14
  सम्मान की प्रक्रिया....16
  उचित सन्तुलन....18
उपसंहार....19

परिचय

क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ है कि आप ने किसी को उपहार दिया और उन्होंने कभी उसका उपयोग ही न किया हो? मेरे एक मित्र ने मुझे उस समय एक कलाकृति दी जब मैं अत्यधिक व्यस्त था। चूँकि तुरन्त मुझे यह समझ में नहीं आया कि उसे कहाँ रखूँ, इसलिए मैं ने उसे एक अलमारी में रख दिया। जैसे कि आप कल्पना कर सकते हैं, लगभग एक वर्ष बाद उस मित्र के दोबारा मेरे घर आने तक मुझे उसकी याद भी नहीं आई। उसने मेरे घर में चारों तरफ देखा और पूछा, "तुम्हें वह तस्वीर कैसी लगी, जो मैं ने तुम्हें पिछले वर्ष दी थी?" उत्तर देते समय मेरा चेहरा लाल हो गया, "कौनसी तस्वीर?" उसने मेरी ओर देखकर कहा, "मैं समझता हूँ मुझे अपने सवाल का जवाब मिल गया है। यदि तुमने उसे पसन्द किया होता तो अवश्य उसका प्रयोग करते।"

मसीही धर्मविज्ञान की सच्चाई भी कुछ ऐसी ही है। मसीह के अनुयायियों के रूप में, हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने हम सब को अपने स्व-प्रकाशन का उपहार दिया है, और उसका प्रयोग करना उसके प्रति हमारी पसन्दगी को प्रदर्शित करता है।

आपके धर्मविज्ञान का निर्माण की हमारी श्रृंखला के अन्तर्गत यह तीसरा अध्याय है, और हमने इस अध्याय का शीर्षक रखा है "प्रकाशन पर भरोसा करना।" धर्मविज्ञान के विकास के दौरान हम देखेंगे कि परमेश्वर के प्रकाशन का प्रयोग कैसे किया जाए।

यह अध्याय तीन भागों में बँटा है: पहला, हम देखेंगे कि वचन प्रकाशन के बारे में क्या सिखाता है और इसे कहाँ पाया जा सकता हैं; दूसरा, हम परमेश्वर के प्रकाशन को समझने में शामिल कुछ ज्यादा महत्वपूर्ण तत्वों की जाँच करेंगे; और तीसरा, हम देखेंगे कि परमेश्वर के प्रकाशन के धर्मवैज्ञानिक निष्कर्षों पर कैसे आत्मविश्वास उत्पन्न किया जाए। आइए पहले इस बात से शुरू करें कि परमेश्वर के प्रकाशन को हम कहाँ पाते हैं।

प्रकाशन को खोजना

विरल अपवादों के साथ, पिछले दो हजार वर्षों से, किसी न किसी प्रकार से इस बात पर सहमति है कि दैवीय प्रकाशन को मसीही धर्मविज्ञान में एक केन्द्रीय भूमिका निभानी चाहिए। यह विश्वास वचन के प्रारम्भिक पृष्ठों तक जाता है कि परमेश्वर ने हम पर स्वयं को, अपनी इच्छा को प्रकट किया है। यह पुराने नियम, यीशु, और नये नियम के लेखकों की विश्वासयोग्य गवाहियों के द्वारा हम तक आया है। परन्तु इस बात को केवल सैद्धान्तिक के रूप से जानना ही काफी नहीं है कि परमेश्वर ने यह अनमोल उपहार हमें दिया है। हमारे लिए यह जानना जरूरी है कि इसे कहाँ खोजा जाए।

इस विषय पर अनुसंधान करते समय, हम तीन विषयों को देखेंगे: पहला, हम सामान्य प्रकाशन के सिद्धान्त को देखेंगे; दूसरा, हम विशेष प्रकाशन की पड़ताल करेंगे; और तीसरा, हम प्रकाशन के इन दो रूपों के बीच अन्तर संबंधों की जाँच करेंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सामान्य प्रकाशन

एक मुख्य तरीका जिसके द्वारा परमेश्वर ने स्वयं को मनुष्य पर प्रकट किया है उसे हम अक्सर "सामान्य प्रकाशन" के नाम से जानते हैं। हम "सामान्य" शब्द का प्रयोग इस बात को दिखाने के लिए करते हैं कि परमेश्वर स्वयं को सामान्य रूप से सारी रची गई वस्तुओं के द्वारा और सामान्य रूप से सब लोगों पर प्रकट करता है। इसे कई बार "प्राकृतिक प्रकाशन" भी कहा जाता है क्योंकि यह प्रकाशन प्रकृति या सृष्टि के माध्यम से आता है।

बाइबल के कई पद सामान्य प्रकाशन के बारे में सिखाते हैं। उदाहरण के लिए, हम भजन 19:1-6, प्रेरितों के काम 14:15-17 और 17:26, 27 में इस विचारधारा के वर्णन को पाते हैं। परन्तु संभवत: सामान्य प्रकाशन का पूर्ण विवरण बाइबल के परिचित पदों, रोमियों 1 के 18 से 32 पदों में दिया गया है।

बाइबल की इस शिक्षा को देखने के लिए हमें दो विषयों को छूना होगा: पहला, सामान्य प्रकाशन का माध्यम; और दूसरा, सामान्य प्रकाशन की विषय सूची।

माध्यम

सबसे पहले, पवित्रशास्त्र हमें सिखाता है कि सामान्य प्रकाशन का माध्यम, या उपकरण सारी सृष्टि है। सुनिए कि पौलुस रोमियों 1:18-20 में इस विषय को कैसे बताता है:

> परमेश्वर का क्रोध स्वर्ग से प्रकट होता है...परमेश्वर ने उन पर प्रकट किया है...जगत की सृष्टि से उसके कामों के द्वारा प्रकट है। (रोमियों 1:18-20)

ये शब्द हमें बताते हैं परमेश्वर स्वयं को हम पर सृष्टि के द्वारा, या जैसे यहाँ बताया गया है, "अपने कामों के द्वारा" प्रकट करता है।

प्रकाशन बाहरी अन्तरिक्ष की विराट आकाशगंगाओं और सूक्ष्म संसार; सृष्टि के भौतिक, निराकार और आत्मिक पहलुओं, यहाँ तक कि मनुष्य के रूप में हमारे अपने अस्तित्व के द्वारा आता है-सृष्टि की हर वस्तु परमेश्वर के प्रकाशन का माध्यम है। दुर्भाग्यवश, मसीही रोमियों पहले अध्याय के इन शब्दों को इस तरह से लेते हैं जैसे कि वे सृष्टि की केवल प्राकृतिक अवस्था के बारे में बताते हैं। हम सब जानते हैं कि कैसे जँगल, नदियाँ, पर्वत, और मरुभूमि अक्सर हमारे विचारों को परमेश्वर की ओर मोड़ते हैं। परन्तु हम अक्सर यह समझने में चूक जाते हैं कि सभ्यता, तकनीक, और मानवीय संस्कृति भी अपनी सम्पूर्णता में परमेश्वर को प्रकट करते हैं।

हमारे लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि रोमियों पहले अध्याय में सृष्टि की प्राकृतिक अवस्था की तस्वीर से कहीं अधिक था, उसने मनुष्य के प्रभाव के अधीन प्रकाशन के माध्यम के रूप में भी सृष्टि का वर्णन किया। मानवीय संस्कृति द्वारा संसार में लाई जाने वाली विकृतियों के बारे में बोलते हुए, पौलुस कहता है कि लोग मनुष्यों द्वारा किए जाने वाले इन बिगाड़ों को देखकर परमेश्वर की इच्छा के बारे में कुछ न कुछ सीखते हैं। उसने रोमियों 1:32 में ये शब्द लिखे:

> वे तो परमेश्वर की यह विधि जानते हैं कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले मृत्यु के दण्ड के योग्य हैं, तौभी न केवल आप ही ऐसे काम करते हैं वरन् करनेवालों से प्रसन्न भी होते हैं। (रोमियों 1:32)

ये शब्द इस बात की ओर इशारा करते हैं कि सामान्य प्रकाशन प्रकृति के साथ लोगों के व्यवहार से भी आता है, न कि केवल सृष्टि की प्राकृतिक अवस्था से। मानवीय तकनीकें, विज्ञान, वास्तुकला, राजनीति, पारिवारिक जीवन, कला, चिकित्सा, संगीत, तथा मानवीय संस्कृति के अनगिनत उत्पाद भी

परमेश्वर के प्रकाशन का माध्यम हैं। हम आसानी से परमेश्वर के प्रकाशन से नहीं बच सकते हैं; यह हमें हर पल घेरे रहता है।

विषय सूची

दूसरा, हमें देखना चाहिए कि रोमियों पहले अध्याय में पौलुस सामान्य प्रकाशन की मूलभूत विषय सूची की ओर भी इशारा करता है।

अब, हमारे दृष्टिकोण से, पौलुस ने इस बात को पूरी तरह स्पष्ट नहीं किया कि सामान्य प्रकाशन के द्वारा लोग क्या जानते हैं। उसकी विशिष्टता की कमी संभवत: इस तथ्य का परिणाम है कि विभिन्न लोग विभिन्न स्थानों और समयों पर सामान्य प्रकाशन के विभिन्न पहलुओं का सामना करते और मानते हैं। फिर भी, पौलुस ने स्पष्ट किया कि सामान्य प्रकाशन मनुष्यों पर कम से कम दो प्रकार की सूचना को प्रकट करता है: परमेश्वर के गुण, और उसके बदले में हमारे नैतिक उत्तरदायित्व।

दूसरी तरफ, जैसे पौलुस ने रोमियों 1:20 में कहा, सृष्टि प्रकट करती है:

> उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ और परमेश्वरत्व...(रोमियों **1:20)**

एक शब्द में, परमेश्वर के गुण जिन्हें प्रत्यक्ष रूप से नहीं देखा जा सकता है वे अप्रत्यक्ष रूप से उसकी सृष्टि में दिखाई देते हैं। इस ग्रह का प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर के चरित्र के कुछ पहलुओं को जानता है क्योंकि, जैसे पौलुस रोमियों 1:19 में लिखता है, सामान्य प्रकाशन में "परमेश्वर ने उन पर प्रकट किया है।"

उदाहरण के लिए, सृष्टि की खूबसूरती परमेश्वर की असाधारण खूबसूरती की ओर इशारा करती है; मानवीय जीवन के लिए उपलब्ध प्राकृतिक स्रोत उसकी भलाई को प्रदर्शित करते हैं; सृष्टि का आकार उसकी विशालता को प्रकट करता है; सृष्टि की जटिलता उसकी बुद्धि को दर्शाती है; और प्रकृति की सामर्थ उसकी दिव्य सामर्थ को प्रकट करती है।

दूसरी तरफ, परमेश्वर के अदृश्य गुणों को प्रदर्शित करने के साथ, सामान्य प्रकाशन परमेश्वर के प्रति हमारे नैतिक उत्तरदायित्वों के पहलुओं को भी बताता है। सुनें कि पौलुस मानवजाति के पापों के बारे में बोलते समय रोमियों 1:32 में इसे किस रीति से बताता है:

> वे तो परमेश्वर की यह विधि जानते हैं कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले मृत्यु के दण्ड के योग्य हैं, तौभी न केवल आप ही ऐसे काम करते हैं वरन् करनेवालों से प्रसन्न भी होते हैं। **(रोमियों 1:32)**

अन्य शब्दों में, सृष्टि के विविध पहलू परमेश्वर के प्रति हमारी नैतिक जिम्मेदारी को प्रकट करते हैं।

उदाहरण के लिए, स्त्री और पुरुष के बीच शारीरिक विभिन्नता विपरीत लिंगी संबंध अपनाने के हमारे उत्तरदायित्व को प्रकट करते हैं। बच्चों की अभिभावकों पर निर्भरता दोनों अभिभावकों द्वारा बच्चों का ध्यान रखने की जिम्मेदारी, और माता-पिता का सम्मान करने के बच्चों के उत्तरदायित्व को प्रकट करती है। अकाल और युद्ध में मनुष्यों का कष्ट दया दिखाने के हमारे कर्त्तव्य को प्रकट करता है। जहाँ भी हम देखते हैं, सृष्टि यह माँग करते हुए हमें पुकारती है कि हम अपने जीवनों को सृष्टि में और सृष्टि के द्वारा प्रदर्शित किए गए परमेश्वर के नैतिक प्रमापों के अनुरूप बनाएँ।

अब जबकि हम सामान्य प्रकाशन के सिद्धान्त को देख चुके हैं, तो हमें प्रकाशन के दूसरे रूप, विशेष प्रकाशन की ओर मुड़ना चाहिए।

विशेष प्रकाशन

प्रकाशन के इस रूप को मोटे तौर पर “विशेष” इसलिए कहा जाता रहा है क्योंकि यह हर जगह पर सब लोगों को नहीं दिया जाता है, बल्कि मानवजाति के विशिष्ट या विशेष गुट को दिया जाता है।

इतिहास में विशेष प्रकाशन के बहुत से रूप रहे हैं, परन्तु मसीही दृष्टिकोण से परमेश्वर ने स्वयं को सर्वाधिक स्पष्ट और पूर्ण रूप में अपने पुत्र, यीशु में प्रकट किया है।

इब्रानियों 1:1-3 विशेष प्रकाशन पर मसीही दृष्टिकोण का संक्षिप्त सारांश देता है:

> पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा थोड़ा करके और भाँति-भाँति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर, इन अन्तिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि की रचना की है। वह उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है...**(इब्रा. 1:1-3)**

मसीह के आगमन से पूर्व, परमेश्वर ने अपने आप को और अपनी इच्छा को बहुत सी विशेष रीतियों में प्रकट किया। उसने सीधे लोगों से बात की, उन्हें अलौकिक स्वप्न दिए, दर्शनों के लिए उनकी आँखों को खोला और भविष्यद्वक्ताओं, याजकों, राजाओं तथा साधुओं के द्वारा बातें की। परन्तु इनमें से कोई भी प्रकाशन परमेश्वर के पुत्र, मसीह में प्रकट पूर्ण और सर्वोच्च महिमामय प्रकाशन के बराबर नहीं है। यीशु का जीवन और शिक्षाएँ परमेश्वर का मुख्य विशेष प्रकाशन हैं। और इसी कारण, यह कहना बिल्कुल उचित है कि मसीही धर्मविज्ञान का प्रमाप मसीह में परमेश्वर का प्रकाशन है। परमेश्वर के सर्वोच्च प्रकाशन के रूप में मसीह के प्रति यह समर्पण कई महत्वपूर्ण परिणामों की ओर ले जाता है। परन्तु हमारे उद्देश्यों के लिए, सर्वाधिक महत्वपूर्ण और व्यावहारिक परिणाम है कि हमें परमेश्वर के प्रकाशन के रूप में वचन के प्रति भी समर्पित होना चाहिए।

यीशु या पहली सदी के पलिश्ती रब्बियों से परिचित हर व्यक्ति जानता है कि यीशु ने पुराने नियम के पवित्र शास्त्रों को परमेश्वर के विशेष प्रकाशन के रूप में देखा। उसने कभी पवित्रशास्त्र पर सवाल नहीं उठाए, परन्तु स्वयं पूर्णत: उनके प्रति समर्पित किया, और दूसरों से भी ऐसा ही करने को कहा। उसका उदाहरण उसके अनुयायियों को अपनी हर सोच, कार्य और भावना में मार्गदर्शक के रूप में उत्पत्ति से मलाकी तक की पुस्तकों पर भरोसा करने का निर्देश देता है। इससे अधिक, हमारे महान शिक्षक के रूप में, यीशु ने अपने विशेष चेलों, प्रेरितों को कलीसिया के लिए आधिकारिक प्रकाशन का संकलन करने के लिए नियुक्त किया, और उनका प्रकाशन अचूक रूप में संक्षेप में नये नियम में दिया गया है।

अत:, जो लोग परमेश्वर के सर्वोच्च प्रकाशन के रूप में मसीह की ओर देखते हैं उन्हें उसके उदाहरण को मानकर पुराने नियम और नये नियम को आज के अपने लोगों के लिए परमेश्वर के विशेष प्रकाशन के रूप में स्वीकार करने के द्वारा उसकी शिक्षाओं के प्रति समर्पण करना चाहिए।

अब जबकि हम देख चुके हैं कि हमारे समय में परमेश्वर का प्रकाशन सृष्टि और पवित्रशास्त्र दोनों में पाया जा सकता है, तो अब हमें अपने ध्यान को विशेष और सामान्य प्रकाशन के बीच अन्तर संबंधों की ओर मोड़ना चाहिए। ये अन्तर संबंध इस बात को देखने में हमारी सहायता करेंगे कि हमें प्रकाशन के दोनों रूपों में से किसी को भी अनदेखा नहीं करना चाहिए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अन्तर संबंध

हम इस विषय के दो पहलुओं को देखेंगे: सामान्य और विशेष प्रकाशन के बीच दोहराव; तथा प्रकाशन के दोनों रूपों की आवश्यकता। आइए पहले सामान्य तथा विशेष प्रकाशन के बीच दोहराव को देखें।

दोहराव

जब हम सामान्य और विशेष प्रकाशन की दो अलग शीर्षकों के अन्तर्गत बात करते हैं, तो हमें यह जानने की भी जरूरत है कि प्रकाशन के ये दो रूप महत्वपूर्ण रूप से एक-दूसरे का दोहराव हैं। इसे देखने के लिए, हमें प्रकाशन के दोनों रूपों में पाई जाने वाली विषय सूची की विविधता को मानना चाहिए।

एक तरफ, पवित्रशास्त्र में विशेष प्रकाशन असाधारण से लेकर बहुत ही सामान्य बातों तक बहुत से विभिन्न विषयों को छूता है। बाइबल के कुछ भाग इतने असाधारण हैं कि कोई भी व्यक्ति उन्हें सामान्य निरीक्षणों या अनुभवों, यहाँ तक कि दिव्य मार्गदर्शन के साथ भी नहीं लिख सकता था। बाइबल के ये भाग गुप्त हैं-जिन्हें असाधारण, अलौकिक रीतियों में दिया गया था। संभवत: बाइबल में इस प्रकार की सामग्री के सर्वाधिक स्पष्ट उदाहरण दानिएल, योएल तथा प्रकाशितवाक्य की पुस्तकों के भाग हैं। इन सामग्रियों को लिखने वाले व्यक्तियों ने अपनी सूचना को दर्शनों और विशेष रूप से उन्हें दिए गए अलौकिक प्रकाशनों के द्वारा प्राप्त किया था। इस अर्थ में, हम पवित्रशास्त्र के इन भागों को "अत्यधिक विशेष प्रकाशन" कह सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, पवित्रशास्त्र में एक प्रकार की मध्यम जगह प्रकट होती है जहाँ हम गुप्त अन्तर्दृष्टियों और आत्मा द्वारा साधारण तरीकों से प्रदान की गई अन्तर्दृष्टियों का मिश्रित रूप पाते हैं। उदाहरण के लिए, राजाओं की पुस्तक या लूका रचित सुसमाचार जैसी बाइबल की ऐतिहासिक पुस्तक को लें। इन पुस्तकों के लेखकों ने स्पष्ट रूप से यह बताया कि उन्होंने अपनी अधिकांश सामग्री को साधारण मानवीय स्रोतों से जुटाया था। राजाओं की पुस्तक इस्राएल और यहूदा के शाही इतिहास का वर्णन करती है। लूका मसीह के जीवन के गवाहों का वर्णन करता है जिनसे उसने अपनी सूचना को एकत्रित किया। विशेष अलौकिक अन्तर्दृष्टियाँ निश्चित तौर पर जोड़ी गईं जब आत्मा ने इन बाइबल के लेखकों का मार्गदर्शन किया। उनके पास अपने स्रोतों के द्वारा जुटाई गई सूचना की शुद्धता के बारे में अन्तर्दृष्टि, स्रोतों की व्याख्या करने की अन्तर्दृष्टि, तथा साधारण माध्यमों द्वारा न मिली सूचना के बारे में अन्तर्दृष्टि थी। अत:, इस अर्थ में, बाइबल के ये भाग असाधारण और साधारण का मिश्रण हैं।

इससे आगे, पवित्रशास्त्र के बड़े हिस्से सामान्य परन्तु अभिप्रेरित अन्तर्दृष्टियों से निर्मित हैं। ऐसा इसलिए है कि पवित्र आत्मा ने अक्सर बाइबल के लेखकों को साधारण अनुभवों के बारे में सही निरीक्षण करने का मार्गदर्शन दिया। उदाहरण के लिए, नीतिवचन 30:25 में महात्मा कहता है:

> चींटियाँ निर्बल जाति तो हैं, परन्तु धूपकाल में अपनी भोजनवस्तु बटोरती हैं। **(नीतिवचन 30:25)**

यह कथन अभिप्रेरित और सत्य है, परन्तु यह प्रकृति के निरीक्षण का परिणाम है, न कि किसी गुप्त दर्शन की प्राप्ति का।

अत:, इस अर्थ में, विशेष प्रकाशन में ऐसी सामग्रियाँ शामिल हैं जिन्हें हम आमतौर पर सामान्य प्रकाशन से जोड़ते हैं, ऐसी बातें जिन्हें व्यावहारिक रूप से संसार के बारे में कोई भी व्यक्ति देख सकता है। हम यह भी कह सकते हैं कि बाइबल के ये भाग "साधारणीकृत विशेष प्रकाशन" हैं।

अब, विशेष प्रकाशन के समान ही, सामान्य प्रकाशन में भी एक विस्तृत विषय सूची शामिल है। एक तरफ, सामान्य प्रकाशन में बहुत साधारण तत्व शामिल हैं, वे बातें जो यदि संसार में अब तक रहे

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सभी बौद्धिक रूप से स्वस्थ लोगों को नहीं तो अधिकांश लोगों को ज्ञात हैं। लगभग हर व्यक्ति जानता है कि संसार विराट है, और विस्तृत आकाश से ढका है। और अधिकांश लोग उन समयों को याद कर सकते हैं जब उन्होंने अपने नैतिक विवेक को अनुभव किया। इन लगभग सार्वभौमिक अनुभवों ने सदा मानवता के लिए परमेश्वर और उसकी इच्छा को प्रकट किया है। हम उन्हें "अत्यधिक सामान्य प्रकाशन" कह सकते हैं।

सामान्य प्रकाशन के केन्द्र की ओर सामान्य प्रकाशन के साधारण और असाधारण तत्वों का मिश्रण है। ये सृष्टि के अनुभव हैं जो केवल कुछ लोगों को दिए जाते हैं क्योंकि वे कुछ रीतियों जैसे समय या स्थान के द्वारा सीमित हैं। उदाहरण के लिए, एक भयानक तूफान की हवाएँ परमेश्वर की सामर्थ को प्रदर्शित करती हैं। परन्तु बहुत से लोग कभी तूफान का अनुभव नहीं करते हैं। हिमालय पर्वतों की ऊँचाईयाँ परमेश्वर की महिमा को प्रकट करती हैं, परन्तु अधिकांश मानव जाति ने कभी हिमालय को देखा ही नहीं है। चूँकि हम सब बहुत सी सीमाओं का सामना करते हैं, इसलिए सारा सामान्य प्रकाशन हर समय सब लोगों तक नहीं पहुँचता है।

श्रेणी की दूसरी तरफ सामान्य प्रकाशन के असाधारण तत्व हैं, वे समय जब लोग अपने धार्मिक विश्वासों में भी, परमेश्वर द्वारा प्रकट किए गए कुछ सत्यों को स्पष्टत: मानते हैं। तथ्य यह है कि सामान्य प्रकाशन में वे बातें शामिल हैं जिन्हें हम अक्सर ज्यादा निकटता से विशेष प्रकाशन से जोड़ते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ गैर-मसीही धर्मों का विश्वास है कि परमेश्वर केवल एक है। बहुत से धर्म साधारण और पवित्र में जिन रीतियों से अन्तर करते हैं वे सच्चे मसीही विश्वास के समानान्तर हैं। हत्या की अधिकांश धर्मों में निन्दा की गई है। आधारभूत सामाजिक न्याय की विभिन्न धर्मों में प्रशंसा की गई है। बाइबल के प्राचीन संसार में, अन्य धर्मों में अक्सर विलक्षण तरीकों से बाइबल के सच्चे विश्वास की समानताएँ पाई जाती थीं। और आज भी, मिशनरियों की सूचना के अनुसार सुसमाचार से वंचित कुछ समूहों के विश्वास मसीही विश्वास के समान हैं। इन मामलों में, हम "विशिष्ट सामान्य प्रकाशन" की बात कह सकते हैं।

अत:, धर्मविज्ञान में विशेष और सामान्य प्रकाशन की भूमिकाओं के बारे में बात करते समय, हमें दो बातों को याद रखने की आवश्यकता है जिन्हें अक्सर भुला दिया जाता है। एक तरफ, हमें याद रखना है कि वचन हमें कुछ ऐसी बातें सिखाता है जो न तो गुप्त हैं और न ही अन्य साधनों द्वारा अज्ञात। वे उन बातों को भी दिव्य अधिकार के साथ सिखाते हैं जो आम हैं तथा जिन्हें सामान्य प्रकाशन द्वारा समझा जा सकता है। इसीलिए हम वचन को न केवल पूर्णत: धार्मिक एवं नैतिक मामलों में, बल्कि इतिहास एवं विज्ञान के क्षेत्र में भी अधिकारपूर्ण मानते हैं।

दूसरी तरफ, हमें यह भी समझने की आवश्यकता है कि सामान्य प्रकाशन हमें उन बातों के बारे में भी बहुत कुछ सिखाता है जिन्हें हम आमतौर पर पवित्रशास्त्र के लिए सुरक्षित छोड़ देते हैं। वास्तव में, जैसा हम इन अध्यायों में देखेंगे, पवित्रशास्त्र द्वारा वर्णित बहुत से धर्मवैज्ञानिक सत्य सामान्य प्रकाशन में भी प्रकट हैं। इसलिए हमें अत्यधिक धार्मिक मामलों में भी दिव्य मार्गदर्शन के लिए सामान्य प्रकाशन की ओर सावधानीपूर्वक देखना चाहिए।

अब जबकि हमने मान लिया है कि सामान्य और विशेष प्रकाशन के पास धर्मवैज्ञानिक विश्लेषण के लिए एक विस्तृत श्रृंखला है, हमें दूसरे विचार की ओर मुड़ना चाहिए। हमें धर्मविज्ञान के लिए प्रकाशन के दोनों रूपों की आवश्यकता क्यों है? धर्मवैज्ञानिक कार्य में प्रत्येक का क्या योगदान है?

आवश्यकता

एक तरफ, हमें विशेष प्रकाशन की इसलिए जरूरत है कि यह कई रीतियों में सामान्य प्रकाशन से श्रेष्ठ है। विशेष प्रकाशन इसलिए निर्मित है कि वह परमेश्वर और उसकी इच्छा को इस प्रकार विशेष रूप से स्पष्ट और प्रकट करे जो सामान्य प्रकाशन की पेशकश से कहीं श्रेष्ठ है। जैसे कि हाल के दशकों में कई धर्मविज्ञानियों ने अवलोकन किया है, परमेश्वर ने आदम तथा हव्वा को सामान्य और विशेष प्रकाशन दोनों

उस समय उपलब्ध कराए जब वे पाप में गिरने से पहले अपनी निर्दोष अवस्था में थे। आदम और हव्वा के निष्पाप होने के कारण, हम इस बात के प्रति निश्चित हो सकते हैं कि सृष्टि को देखते समय वे परमेश्वर और अपने बारे में उसकी इच्छा को बहुत कुछ जानते थे। परन्तु, पाप से पहले भी, धर्मविज्ञान का निर्माण विशेष प्रकाशन के मार्गदर्शन के बिना केवल सृष्टि के अवलोकन से नहीं किया जाना था। परमेश्वर ने भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष, वाटिका के रख-रखाव, फलने-फूलने, वाटिका की सीमाओं के बाहर घूमने, और सम्पूर्ण पृथ्वी पर राज करने के संबंध में विशिष्ट निर्देशों के साथ आदम को अपना विशेष वचन भी दिया था।

इससे बढ़कर, पाप के संसार में आने के बाद, विशेष प्रकाशन ने परमेश्वर के छुटकारे की योजना पर भी ध्यान केन्द्रित किया। यद्यपि सामान्य प्रकाशन प्रकट करता है कि हम परमेश्वर के दण्ड के अधीन हैं, केवल विशेष प्रकाशन ही मसीह में उद्धार का खुलासा करता है। विशेषत: पाप में गिरने के बाद से, सामान्य प्रकाशन से धर्मविज्ञान के निर्माण की प्रक्रिया, जिसे कई बार प्राकृतिक धर्मविज्ञान भी कहा जाता है, का मार्गदर्शन विशेष प्रकाशन द्वारा होना चाहिए। अन्यथा, इस बात की संभावना ज्यादा है कि हम उसका दुरुपयोग करें जिसे परमेश्वर ने सृष्टि में प्रकट किया है।

पवित्रशास्त्र की हमारी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, हमें सामान्य प्रकाशन की अपनी आवश्यकता को भी देखना चाहिए। हमारे धर्मविज्ञान को केवल बाइबल से ही बनाना पर्याप्त क्यों नहीं है? सामान्य प्रकाशन का ऐसा क्या योगदान है जिसे हम पवित्रशास्त्र में नहीं पाते हैं?

अब, जैसे हमने कहा, हम पवित्रशास्त्र के आधिकारिक मार्गदर्शन के बिना प्रकृति या सामान्य प्रकाशन को कभी स्वीकार नहीं करते हैं। परन्तु साथ ही, हमें यह समझना चाहिए कि पवित्रशास्त्र प्रत्यक्ष रूप से केवल सीमित संख्या में बातों का वर्णन करता है, और यह कि सामान्य प्रकाशन के विस्तार की तुलना में पवित्रशास्त्र केवल कुछ ही बातों के बारे में बात करता है। सामान्य प्रकाशन उस पृष्ठभूमि को उपलब्ध कराता है जिसकी सम्प्रेषण के लिए विशेष प्रकाशन को आवश्यकता होती है। पिछले अध्यायों में सीखे गए सिद्धान्त को लागू करने के लिए, सामान्य और विशेष प्रकाशन के विभिन्न पहलू पारस्परिक संबंधों के जाल बुनते हैं।

सामान्य प्रकाशन की यह भूमिका कम से कम दो तरीकों में प्रकट होती है। एक तरफ, सामान्य प्रकाशन से हम जो कुछ सीखते हैं वह हमें विशेष प्रकाशन को समझने के योग्य बनाता है। इसे इस प्रकार से सोचें। हम सब जानते हैं कि पवित्रशास्त्र के प्रकाशन को समझने के लिए एक व्यक्ति में पढ़ने, या कम से कम कुछ हद तक भाषा को समझने की योग्यता होनी चाहिए। परन्तु हम में से कितनों ने बाहरी स्रोतों की सहायता के बिना केवल बाइबल के शब्दों के आधार पर भाषा को पढ़ना या समझना सीखा? उत्तर लगभग निश्चित है "किसी ने भी नहीं।" हम में से अधिकांश ने भाषा को अभिभावक या देखभाल करने वाले से, उन वस्तुओं और कार्यों की सहायता से सीखा जिनमें सृष्टि के अन्य तत्व शामिल हैं। और बाद में हमने ऐसे ही माध्यमों के द्वारा पढ़ना सीखा।

सामान्य प्रकाशन के इन पहलुओं से सीखी हुई बातों पर अग्रसर होने के बाद ही हम बाइबल तक पहुँचने के योग्य हो सके थे। वास्तव में, जब हम पवित्रशास्त्र की ओर आते हैं तो सामान्य प्रकाशन पर हमारी निर्भरता इससे कहीं गहरी है। यदि लोगों ने सामान्य प्रकाशन से न सीखा होता तो हमारे पास पढ़ने के लिए बाइबल तक न होती। बाइबल के अनुवादक अनुवाद करना; छपाई करने वाले छापना; और प्रकाशन करने वाले प्रकाशन की विधियों को मुख्यत: सामान्य प्रकाशन से ही सीखते हैं। इन अत्यधिक मूलभूत अर्थों में, हमारे लिए सामान्य प्रकाशन पर ध्यान देना आवश्यक है क्योंकि यह हमें विशेष प्रकाशन के अध्ययन के लिए तैयार करता है।

दूसरी तरफ, बाइबल को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए भी सामान्य प्रकाशन आवश्यक है। उदाहरण के लिए, बाइबल विभिन्न विषयों को छूती है और पालन करने के लिए अचूक सिद्धान्त प्रदान

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

करती है। फिर भी, इन सिद्धान्तों को लागू करने के लिए हमें सृष्टि के बारे में कुछ जानना जरूरी है जिस पर हम इन्हें लागू कर रहे हैं।

बाइबल हमें बताती है कि पति को अपनी पत्नी से प्यार करना चाहिए, परन्तु इस बाइबल के सिद्धान्त को लागू करने के लिए हमें सामान्य प्रकाशन से कुछ बातें सीखनी हैं। एक पति क्या है? एक पत्नी क्या है? हमें यह भी जानना है कि एक पत्नी विशेष से उसकी विशिष्ट परिस्थितियों में प्यार को दिखाने का अर्थ क्या है? इस अर्थ में, पवित्रशास्त्र का विश्वासयोग्य प्रयोग सदा परमेश्वर के सामान्य प्रकाशन पर निर्भर रहता है।

अत:, एक शब्द में, हम देखते हैं कि परमेश्वर ने स्वयं को सामान्य और विशेष प्रकाशन में प्रकट किया है, और वह हमसे अपने प्रकाशन को सृष्टि और पवित्रशास्त्र दोनों में खोजने की अपेक्षा रखता है। प्रकाशन के किसी भी रूप को अपने बल पर खड़े रहने के लिए नहीं दिया गया था। परमेश्वर ने यह निर्धारित किया है कि हम अपने धर्मविज्ञान का निर्माण करते समय दोनों को मजबूती से पकड़े रहें।

यह देखने के बाद कि मसीहियों को परमेश्वर के स्व-प्रकटीकरण को उसके विशेष और सामान्य प्रकाशन में एक साथ खोजना चाहिए, हमें अपने दूसरे शीर्षक पर आना चाहिए: हम प्रकाशन को किस प्रकार समझें कि उसमें से धर्मविज्ञान को बना सकें?

प्रकाशन को समझना

यहाँ एक महत्वपूर्ण अन्तर को बताना जरूरी है। जिस तरह किसी व्यक्ति द्वारा आपको उपहार देना, और आपके द्वारा उसका उचित उपयोग करना, दोनों अलग-अलग बातें हैं, उसी प्रकार परमेश्वर द्वारा हमें अपना प्रकाशन देना एक बात है, और हमारे द्वारा धर्मविज्ञान में उसका उचित प्रयोग एक दूसरी बात है। अब, रोमियों एक सिखाता है कि परमेश्वर ने स्वयं को सृष्टि में पर्याप्त स्पष्टता से प्रकट किया है तथा सब लोग जानते हैं कि वह आराधना के योग्य है और बलवे के कारण वे सब परमेश्वर के दण्ड के अधीन हैं। फिर भी, इन मूलभूत स्तरों से आगे सामान्य और विशेष प्रकाशन दोनों को समझना इतना आसान नहीं है; यह मनन की एक कठिन प्रक्रिया है।

प्रकाशन को समझने की इस प्रक्रिया को देखने के लिए, हम तीन दिशाओं में अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे: पहला हम पाप की रूकावट को देखेंगे; दूसरा, हम पवित्र आत्मा के प्रदीप्तीकरण को देखेंगे; और फिर, तीसरा, हम अपने धर्मविज्ञान पर इसके परिणामों को देखेंगे।

पाप की रूकावट

यह दुखद है लेकिन हमारे लिए यह मानना जरूरी है कि पाप का मनुष्यों पर इतना बुरा प्रभाव पड़ा है कि यदि परमेश्वर पाप के प्रभाव को ऐसे ही छोड़ दे, तो हम उसके प्रकाशन को अपनी पूरी ताकत से ठुकरा देंगे। परमेश्वर के साधारण और विशेष अनुग्रह के अलावा, परमेश्वर के प्रकाशन से अपने धर्मविज्ञान के निर्माण और अंगीकार का प्रत्येक प्रयास व्यर्थ होगा। पारम्परिक धर्मवैज्ञानिक शब्दों में, इस समस्या को अक्सर "पाप के दिमागी प्रभाव" कहा जाता है, जो यूनानी भाषा के शब्द नूस (मस्तिष्क) से लिया गया है।

पाप के इन दिमागी प्रभावों को दूर करने के लिए, पहले हम देखेंगे कि किस प्रकार पाप सामान्य प्रकाशन के प्रति हमारे मस्तिष्क को अन्धेरा कर देता है, और फिर हम देखेंगे कि विशेष प्रकाशन के साथ भी वह ऐसा कैसे करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सामान्य प्रकाशन

यद्यपि पृथ्वी पर प्रत्येक व्यक्ति सामान्य प्रकाशन के कुछ पहलुओं को जानता है, परन्तु पाप हम जो कुछ जानते हैं उसमें से अधिकांश को दबा देता है और सामान्य प्रकाशन की अधिकांश बातों के प्रति हमें अन्धा बना देता है। रोमियों 1:18 में पौलुस ने कहा कि सामान्य प्रकाशन के सत्य को जानने वाले पापी अन्यजाति "सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं।" अन्य शब्दों में, पाप हम पर उस सत्य को दबाने के लिए जोर डालता है जो स्पष्ट रूप में सृष्टि के द्वारा प्रकट है; हम इनकार करते हैं और सामान्य प्रकाशन से दूर हो जाते हैं। पौलुस ने यह भी लिखा कि जब अविश्वासी सामान्य प्रकाशन में प्रकट नैतिक सिद्धान्तों का उल्लंघन करते हैं तो परमेश्वर उन्हें "नीच कामनाओं के वश में," "पापपूर्ण वासनाओं," और "उनके निकम्मे मन पर" छोड़ देता है।

वासना और निकम्मापन हमारे दिलों को चलाता है, और हमारी दृष्टि धुँधली है। ऐसा नहीं है कि हम सामान्य प्रकाशन के किसी भी सत्य को नहीं देख सकते, क्योंकि हम देखते हैं। हम इस हद तक परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित हैं कि हम सामान्य प्रकाशन के तथ्यों को तोड़-मरोड़कर अपनी निकम्मी लालसाओं के अनुरूप बना देते हैं। हम सत्य को झूठ कहते हैं, और झूठ को सत्य; हम भले को बुरा कहते हैं, और बुरे को भला।

इस बात को देखने के बाद कि कैसे पाप सामान्य प्रकाशन के उचित उपयोग की हमारी क्षमता को भ्रष्ट कर देता है, हमें अपने ध्यान को विशेष प्रकाशन की ओर मोड़ना चाहिए। पाप किस प्रकार विशेष प्रकाशन के हमारे उपयोग को प्रभावित करता है, विशेषत: वचन में परमेश्वर के प्रकाशन को?

विशेष प्रकाशन

बाइबल स्वयं यह दिखाती है कि यदि पापी मनुष्यों को परमेश्वर की दया के बिना छोड़ दिया जाए तो वे वचन की शिक्षा का विरोध करते हैं। यीशु ने यूहन्ना 5:39,40 में इस पर टिप्पणी की, जब उसने कहा कि फ़रीसी पुराने नियम को गलत रीति से प्रयोग करते हैं। पतरस ने पौलुस की पत्रियों पर 2 पतरस 3:15,16 में लगभग ऐसी ही टिप्पणी की, जब उसने कहा कि लोग दूसरे पवित्र शास्त्रों के समान पौलुस के लेखों में भी तोड़-मरोड़ करते हैं। परमेश्वर के अनुग्रह के बिना, पापी मनुष्य पवित्रशास्त्र का दुरुपयोग करता और उसे गलत रीति से समझता है।

बाइबल की पापपूर्ण गलत व्याख्या की यह समस्या केवल अविश्वासियों तक ही सीमित नहीं है; यह विश्वासियों में भी फैली हुई है। जल्दी से मन में आने वाला एक उदाहरण है कि किस प्रकार बहुत से यूरोपीय और अमरीकी धर्मविज्ञानियों ने विश्वास किया कि पवित्रशास्त्र 17वीं, 18वीं, तथा 19वीं सदी के अफ्रीकी गुलामों के व्यापार का समर्थन करता है। यह कैसे हुआ? मसीही लोग पवित्रशास्त्र को समझने में इतनी भूल कैसे कर बैठे? उत्तर यह है कि पाप पवित्रशास्त्र को समझने की हमारी योग्यता में भी रूकावट डालता है। हमारी बुद्धि या बाइबल के ज्ञान की गहराई चाहे कितनी भी हो, हमें मानना होगा कि हम सब किसी न किसी रीति से विशेष प्रकाशन को तोड़-मरोड़ रहे हैं, उसे बिगाड़ रहे हैं। हमारी कमियों और पक्षपातपूर्ण रवैयों के प्रति हम जितना अधिक जागरूक होंगे, उतना ही अधिक हम इस प्रकार के गलत पठन को रोक सकते हैं, परन्तु हम सब उन कुछ तरीकों को जाने बिना कब्र में जायेंगे जिनके द्वारा हमने बाइबल को गलत रूप से पढ़ा है।

पाप का दिमागी प्रभाव उन बहुत सी समस्याओं का विवरण देता है जिनका सामना हम परमेश्वर के प्रकाशन से धर्मविज्ञान का निर्माण करते समय करते हैं। पवित्रशास्त्र और सृष्टि दोनों हम पर परमेश्वर और उसकी इच्छा को प्रकट करते हैं, परन्तु परमेश्वर के प्रकाशन की व्याख्या करने वाले हम लोग पापी हैं। हम सर्वदा सृष्टि या पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के प्रकाशन को नहीं समझते हैं। यह गिरे हुए संसार में धर्मविज्ञान की एक दुखद वास्तविकता है।

अब जबकि हम यह देख चुके हैं कि पाप कितनी गहराई से सामान्य तथा विशेष प्रकाशन के उचित उपयोग की हमारी योग्यता को प्रभावित करता है, हमें प्रकाशन को उचित रूप से समझने के लिए हमारी सर्वोत्तम आशा की ओर मुड़ना चाहिए: पवित्र आत्मा का प्रदीप्तीकरण।

पवित्र आत्मा का प्रदीप्तीकरण

अक्सर मसीही यह नहीं समझते हैं कि प्रकाशन से सच्चे धर्मविज्ञान को निकालना किस सीमा तक हमारे जीवनों में पवित्र आत्मा की व्यक्तिगत सेवकाई का परिणाम है। इसके बजाय, वे मनुष्यों के रूप में अपनी स्वाभाविक योग्यताओं पर भरोसा करते हैं। पुनर्जागरण आधुनिकवाद की आत्मा में, हम सोचते हैं कि यदि हम तार्किक हैं और अच्छी तरह परिभाषित विधियों को परमेश्वर के प्रकाशन पर लागू करें तो हम सच्चे धर्मविज्ञान का निर्माण कर सकते हैं। परन्तु वास्तविकता में, हमारी तार्किक योग्यताओं का सृष्टि की गिरी हुई अवस्था से अलग कोई अस्तित्व नहीं है। हमारी गिरी हुई स्थिति में, पाप हमारी भाषागत और तार्किक योग्यताओं सहित, हमारे दिमाग को अन्धेरा कर देता है, जिससे अक्सर हम प्रकाशन को उचित रूप से समझने में असफल हो जाते हैं। कुछ और जरूरी है; कुछ ऐसा जो हमारी तार्किक, भाषागत, और अनुभवजन्य क्षमताओं को सबल बनाए; कुछ ऐसा जो हमें सामान्य और विशेष प्रकाशन को उनके वास्तविक रूप में समझने के योग्य बनाए और हम एक सच्चा धर्मविज्ञान बना सकें। केवल परमेश्वर के आत्मा का प्रदीप्तीकरण ही हमारी अन्धी आँखों में ऐसी रोशनी ला सकता है।

आत्मा के प्रदीप्तीकरण का अनुसंधान करने के लिए, आइए पहले हम देखें कि वह कैसे विशेष प्रकाशन की अन्तर्दृष्टि देता है और फिर यह कि कैसे वह सामान्य प्रकाशन को भी देखने के लिए हमारी आँखों को खोलता है।

विशेष प्रकाशन

पारम्परिक प्रोटेस्टेन्ट धर्मविज्ञान में "प्रदीप्तीकरण" शब्द बारम्बार विशेष प्रकाशन की अन्तर्दृष्टि देने के पवित्र आत्मा के कार्य पर लागू किया जाता है। पवित्र आत्मा हमारे अन्दर कार्य करता है, हमारे दिमाग़ों को नया करता है, जिससे हम परमेश्वर के वचन को समझ, स्वीकार, और लागू कर सकें। देखें पौलुस इफ़िसियों 1:17-18 में इस सत्य को कैसे बताता है:

> हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुम्हें अपनी पहचान में ज्ञान और प्रकाश की आत्मा दे, और तुम्हारे मन की आँखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान लो कि उसकी बुलाहट की आशा क्या है। **(इफ़िसियों 1:17-18)**

अब, यह समझना महत्वपूर्ण है कि विशेष प्रकाशन का आत्मा का प्रदीप्तीकरण विभिन्न रीतियों से कार्य करता है। एक तरफ, वचन इस बात को स्पष्ट करता है कि परमेश्वर का आत्मा इस रीति से कार्य करता है कि गैर-मसीही लोग भी विशेष प्रकाशन के बहुत से पहलुओं को समझ सकें। गिनती 24:2 के अनुसार, परमेश्वर का आत्मा एक अन्यजाति भविष्यद्वक्ता, बिलाम पर उतरा और उसे अन्तर्दृष्टि प्रदान की। और यूहन्ना 11:49-51 में, यीशु को क्रूस पर चढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले महायाजक कैफा ने यीशु की मृत्यु के बारे में बिल्कुल सही भविष्यद्वाणी की। मत्ती के 21वें अध्याय में, फ़रीसी समझ गए थे कि दुष्ट किसानों का दृष्टान्त उनके बारे में था, लेकिन उन्होंने वास्तविक पश्चाताप की बजाय हत्या की योजना बनाई। इसी प्रकार, इब्रानियों 6-4 में लेखक ने विशेष तौर पर उन लोगों के लिए आत्मा के प्रदीप्तीकरण के बारे में बताया जिनके उद्धार पर वह बाद में सवाल उठाता है।

हम इन उदाहरणों को "सामान्य अनुग्रह" के सन्दर्भ में "आत्मा के सामान्य कार्य" कह सकते हैं। ये आत्मा द्वारा संसार में किए जाने वाले बहुत से गैर-उद्धारात्मक कार्यों के कुछ उदाहरण हैं। इसी कारण

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

गैर-विश्वासी भी वचन की अनुरूपता में धर्मविज्ञान को समझ तथा सिखा सकते हैं। यह उन पर पवित्र आत्मा के कार्य का परिणाम है, यद्यपि वे छुड़ाए नहीं गए हैं।

साथ ही, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि कलीसिया पवित्र आत्मा का मन्दिर है। कलीसिया संसार में उसकी विशेष उपस्थिति और सेवकाई का कोष है। वह अपने छुड़ाए हुए लोगों को परमेश्वर के वचन का उद्धार करने वाला ज्ञान देता है। और आत्मा के प्रदीप्तीकरण का कार्य गैर-विश्वासियों की बजाय विश्वासियों के बीच अधिक होने की अपेक्षा रखना सही है। वास्तव में, यह अपेक्षा रखना सही है कि विश्वास करने वाले धर्मविज्ञानी गैर-विश्वासियों की तुलना में आत्मा से कहीं अधिक सीखते हैं।

विशेष प्रकाशन के प्रति हमारे मनों के प्रदीप्तीकरण में आत्मा की महत्वपूर्ण भूमिका एक ऐसे महत्वपूर्ण विषय को उठाती है जिसे प्रत्येक मसीही धर्मविज्ञानी को याद रखना चाहिए। चूँकि केवल परमेश्वर का आत्मा हमें प्रकाश देता है, इसलिए मसीही धर्मविज्ञानियों को ईमानदारी और पूरे मन से आत्मा के साथ बने रहने के लिए समर्पण करना चाहिए। मसीही धर्मविज्ञान एक अव्यक्तिगत परियोजना नहीं है जिसे हम अपनी सामर्थ से पूरा कर सकें। यदि हम विशेष प्रकाशन से सच्चे धर्मविज्ञान के निर्माण की आशा रखते हैं तो इसके लिए पवित्र आत्मा के कार्य के साथ उच्च व्यक्तिगत सम्पर्क और पवित्रिकृत संवेदनशीलता की जरूरत है। हम अपने धर्मवैज्ञानिक निष्कर्षों के उचित रूप से पवित्रशास्त्र पर आधारित होने की आशा केवल तभी कर सकते हैं जब हम स्वयं को सम्पूर्ण मन से अनुग्रह के आत्मा की अगुवाई की बाट जोहने में समर्पित करें।

विशेष प्रकाशन के आत्मा के प्रदीप्तीकरण को ध्यान में रखते हुए, अब हम प्रदीप्तीकरण और सामान्य प्रकाशन की ओर मुड़ेंगे। अधिकांश मसीही इस विचार से परिचित हैं कि वचन को अच्छी तरह से समझने और लागू करने के लिए, हमें पवित्र आत्मा के प्रदीप्तीकरण की आवश्यकता है। साथ ही, हमें यह भी याद रखना चाहिए कि आत्मा स्त्रियों और पुरुषों को सामान्य प्रकाशन को उचित रूप से समझने की योग्यता भी देता है।

सामान्य प्रकाशन

कई प्रकार से इस सत्य को हम वचन में देखते हैं। एक महत्वपूर्ण रीति जिस से वचन इस विषय पर बात करता है, वह है बुद्धि का सिद्धान्त। बाइबल में, बुद्धि परमेश्वर-प्रदत्त, उचित समझ है जो विशेषत: सामान्य प्रकाशन पर ध्यान केन्द्रित करती है। और बुद्धि आती कहाँ से है? परमेश्वर का आत्मा बुद्धि सिखाता है।

दानिएल 5:14 में, अन्यजाति राजा बेलशस्सर ने पहचान लिया कि दानिएल की बुद्धि दिव्य थी। नीतिवचन 2:6 में, हम पढ़ते हैं कि सारी बुद्धि परमेश्वर से आती है। इसी प्रकार, निर्गमन 31:3 के अनुसार, बसलेल और ओहोलियाब की कारीगरी में निपुणता का कारण उनका पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना था। ये तथा इसी प्रकार के अन्य पद्यांश हमें सिखाते हैं कि आत्मा का प्रदीप्तीकरण न केवल विशेष प्रकाशन के लिए बल्कि सामान्य प्रकाशन के लिए भी आवश्यक है।

देखें कि सामान्य प्रकाशन में लोगों द्वारा हर प्रकार के सत्य की खोज में पवित्र आत्मा के कार्य के बारे में काल्विन अपनी पुस्तक, इंस्टिटयूट ऑफ़ क्रिश्चियन रिलीजियन की पुस्तक 2, अध्याय 2 में क्या कहते हैं:

> जब कभी हम सांसारिक लेखकों में ऐसे विषयों को देखते हैं, तो उनमें चमकती हुई सत्य की प्रशंसनीय रोशनी हमें सिखाने पाए कि मनुष्य का मन, यद्यपि अपनी सम्पूर्णता से गिरा हुआ और दूषित है, फिर भी परमेश्वर के उत्कृष्ट उपहारों से ढ़का हुआ और आभूषित है। यदि हम परमेश्वर के आत्मा को सत्य का एकमात्र स्रोत मानते हैं, तो हम न तो स्वयं सत्य का तिरस्कार करेंगे, न ही उस स्थान से घृणा

> करेंगे जहाँ कहीं यह प्रकट होता है, जब तक कि हम परमेश्वर के आत्मा का अपमान करने की इच्छा न करें...परन्तु यदि परमेश्वर की यह इच्छा है कि अधर्मियों के द्वारा भौतिक विज्ञान, भाषा, गणित, और ऐसे संकायों में हमारी सहायता हो, तो आइए हम उनकी मदद का उपयोग करें।

जैसे काल्विन ने यहाँ कहा, परमेश्वर का आत्मा विश्वासियों और गैर-विश्वासियों दोनों को सामान्य प्रकाशन के सत्य सिखाता है। वह सत्य का एकमात्र सोता है। इस कारण, सामान्य प्रकाशन से संबंधित विषयों पर भी शरीर की सामर्थ में मसीही धर्मविज्ञान के निर्माण का प्रयास करना उतना ही मूर्खतापूर्ण है जितना कि शरीर की सामर्थ में उद्धार को खोजना।

यह सब इस बात को बताने के लिए है कि परमेश्वर के प्रकाशन से सफलतापूर्वक धर्मविज्ञान का निर्माण करना कोई ऐसी बात नहीं है जो अपने आप होती है या कुछ ऐसा जिसे आप या मैं अपनी सामर्थ से कर सकें। धर्मविज्ञान को समझना एक नम्र करने वाला, धार्मिक अनुभव है जिसमें हम निरन्तर अपनी प्राकृतिक योग्यताओं की सीमाओं से टकराते हैं और परमेश्वर के आत्मा पर हमारी निर्भरता को निरन्तर नया होता पाते हैं।

परिणाम

पाप का प्रभाव और आत्मा सामान्य और विशेष प्रकाशन की हमारी समझ में धर्मविज्ञान के निर्माण की प्रक्रिया में हमें कुछ निश्चित परिणामों की अपेक्षा रखने के लिए तैयार करते हैं। अक्सर पाप और आत्मा के बीच का तनाव हमें ऐसी परिस्थितियों में ले आता है जहाँ विशेष और सामान्य प्रकाशन की खोजें परस्पर विरोधी प्रतीत होती हैं।

धर्मविज्ञान का निर्माण तब तक तुलनात्मक रूप से आसान है जब तक पवित्रशास्त्र में हमारे द्वारा विश्वास की जाने वाली हर बात आसानी से सामान्य प्रकाशन की हमारी समझ के अनुरूप होती है। उदाहरण के लिए, बाइबल के ऐतिहासिक रूप से सही होने की बात पर विश्वास करना तब तक कठिन नहीं है जब तक वैज्ञानिक प्रमाण इसका समर्थन करते प्रतीत होते हैं। यह मानना मुश्किल नहीं है कि चोरी करना अनैतिक है क्योंकि ऐसे बहुत से लोग हैं जो चोरी के कारण होने वाली सामाजिक बुराइयों को जानते हैं।

परन्तु आइए हम एक-दूसरे के साथ ईमानदार रहें। अक्सर, बाइबल में हम एक बात पाते हैं, और संसार में हमारे चारों तरफ कुछ ऐसा जो एकदम विपरीत प्रतीत होता है। हम अपने जीवन के अनुभव से कुछ सीखते हैं, लेकिन बाद में हमें पता चलता है कि बाइबल तो इसके बिल्कुल विपरीत सिखाती प्रतीत होती है। अब हम देख चुके हैं कि मसीहियों को सामान्य और विशेष प्रकाशन दोनों के आधार पर धर्मविज्ञान का निर्माण करना चाहिए। हम इन समस्याओं का समाधान केवल विशेष प्रकाशन या सामान्य प्रकाशन का इनकार करके नहीं कर सकते हैं। तो हम प्रकाशन के इन दोनों स्रोतों के बीच प्रत्यक्ष विरोधाभासों को कैसे हल करें? हम क्या करें जब हम पाते हैं कि बाइबल की कुछ बातें वैज्ञानिक खोज या साधारण अनुभव के विपरीत प्रतीत होती है?

सबसे पहले, हमें ऐसी परिस्थिति में इस दृढ़ विश्वास के साथ प्रवेश करना चाहिए कि सामान्य और विशेष प्रकाशन वास्तव में कभी एक-दूसरे का विरोध नहीं करते हैं। सामान्य और विशेष प्रकाशन में वही परमेश्वर बात कर रहा है-परमेश्वर जो केवल सच बोलता है क्योंकि वह झूठ नहीं बोल सकता। इससे बढ़कर, हमें यह भी समझना चाहिए कि परमेश्वर के लिए सारी सृष्टि और वचन में प्रकट की गई बातों को एक साथ मिलाना मुश्किल नहीं है। चाहे प्रकाशन के ये दो स्रोत कितने भी असंगत प्रतीत हों, परमेश्वर के दृष्टिकोण से हम जानते हैं कि वास्तव में ये दोनों सत्य और एक-दूसरे के अनुरूप हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

दूसरा, हमें याद रखना चाहिए कि जब हम विशेष और सामान्य प्रकाशन के संबंध में अपनी जानकारी के बारे में बात करते हैं, तो हम वास्तव में प्रकाशन के बारे में नहीं, बल्कि प्रकाशन के बारे में अपनी समझ के संबंध में बात करते हैं, समझ जो सदा सिद्धता से नीचे रहती है। यद्यपि सामान्य और विशेष प्रकाशन वास्तव में कभी विरोधाभासी नहीं होते क्योंकि वे दोनों परमेश्वर की ओर से हैं, उनके बारे में हमारी समझ निश्चित रूप से विरोधाभासी हो सकती है क्योंकि वह हमारी ओर से है।

अतः, जब हम विशेष और सामान्य प्रकाशन के बीच स्पष्ट अन्तरों का सामना करते हैं, तो स्थिति का मूल्यांकन करने के चार मुख्य तरीके हैं।

पहला, हमेशा यह संभावना रहती है कि हमने विशेष प्रकाशन को गलत समझा हो और स्वयं बाइबल का इनकार किए बिना हमें वचन की अपनी व्याख्या को बदलना चाहिए। दूसरा, सामान्य प्रकाशन को समझने में गलती करने पर विरोधाभास उत्पन्न हो सकते हैं। बार-बार, हम अनुभव से निष्कर्ष निकालते हैं जिन्हें वचन द्वारा सुधारा जाना जरूरी है। तीसरा, संभवतः हमने विशेष और सामान्य प्रकाशन दोनों को समझने में गलती की हो। इस बात की संभावना सर्वदा रहती है कि हमारे संसार के अनुभव बाइबल की शिक्षा के अनुरूप प्रतीत नहीं होते हैं क्योंकि हम पवित्रशास्त्र को सही रूप से समझने में असफल हो गए हैं और हम अपने अनुभवों का सही अनुमान लगाने में असफल हो गए हैं। चौथा, संभवतः हमारा किसी ऐसे रहस्य से सामना हुआ हो जो हमारी मानवीय समझ के परे है। उदाहरण के लिए, सामान्य प्रकाशन का हमारा अनुभव निश्चित तौर पर हमारी अगुवाई नहीं करता कि हम तीन व्यक्तियों के एक अस्तित्व में होने की अपेक्षा करें। फिर भी, बाइबल हमें परमेश्वर के बारे में यही सिखाती है। हम कैसे इन दो दृष्टिकोणों को मिला सकते हैं? ऐसा नहीं हो सकता। त्रिएकत्व का सिद्धान्त हमारी समझ से बाहर का एक रहस्य है।

अब, एक व्यावहारिक विषय के रूप में, हम सर्वदा यह नहीं बता सकते कि हम इन चारों परिस्थितियों में से किसका सामना कर रहे हैं। अतः, बहुत बार हम केवल सबूत के बोझ के आधार पर कार्य करते हैं। क्या हम पवित्रशास्त्र या सामान्य प्रकाशन की अपनी व्याख्या पर सबूत का भारी बोझ डालते हैं? इस विषय में मसीही विभिन्न दिशाओं में जाते हैं।

एक तरफ, अक्सर “ज्यादा उदार” कहलाने वाले मसीहियों में वचन की समझ के प्रति समर्पण करने की बजाय सामान्य प्रकाशन की अपनी समझ को जल्दी स्वीकार करने की प्रवृत्ति होती है। परन्तु “ज्यादा कट्टर” कहलाने वाले मसीहियों में विरोधाभास की स्थिति में विशेष प्रकाशन की अपनी समझ को स्वीकार करने की प्रवृत्ति होती है। दूसरी रणनीति बुद्धि का बेहतर हिस्सा है। जब तक सामान्य प्रकाशन पर हमारे मनन के प्रमाण आश्चर्यजनक न हों, हमें पवित्रशास्त्र की शिक्षा को मानना चाहिए। मसीह और उनके प्रेरितों ने जीवन को समझने में हमारे मार्गदर्शक के रूप में पवित्रशास्त्र का समर्थन किया। अतः, प्रत्यक्ष विरोधाभासों के उत्पन्न होने पर हमें स्वयं को उनके प्रति समर्पित करने के लिए तैयार रहना चाहिए। जैसे पौलुस ने 2 तीमुथियुस 3:16-17 में कहा:

> सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है...और लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने। (2 तीमुथियुस 3:16-17)

परन्तु साथ ही, अच्छे विश्वास में हमें याद रखना चाहिए कि चूँकि पाप के कारण पवित्रशास्त्र की हमारी समझ दूषित हो गई है, इसलिए हमें बार-बार मुद्दों पर आने की जरूरत पड़ सकती है। सदियों से विश्वासयोग्य मसीहियों की रीति अपने निर्णयों को बाइबल की शिक्षाओं के अपने विश्वास पर आधारित करने की रही है, यद्यपि वे जानते हैं कि बाद में उन्हें बाइबल की अपनी समझ को सुधारने की जरूरत पड़ सकती है। बुद्धि और समर्पण का यह मार्ग हमसे आग्रह करता है कि हम धर्मविज्ञान का निर्माण ईमानदारी से बाइबल की शिक्षाओं पर अपने विश्वास के आधार पर करें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रकाशन से धर्मविज्ञान का निर्माण पाप और पवित्र आत्मा के प्रभाव के परिणामस्वरूप मुश्किलों से भरे होने का तथ्य हमें इस अध्याय के हमारे तीसरे मुख्य शीर्षक पर लाता है: ऐसी मुश्किल स्थिति में, हम अपने धर्मवैज्ञानिक आधारों पर आत्म-विश्वास को कैसे विकसित कर सकते हैं?

आत्मविश्वास को विकसित करना

सुसमाचारिक मसीहियों के बीच एक प्रसिद्ध नारा था जो कुछ इस प्रकार था। "परमेश्वर ने कहा; मैंने विश्वास किया; और यह इसे व्यवस्थित कर देता है।" यह कथन कई प्रकार से सत्य है। यह उसी बात को कहता है जिसे हम इस पूरे अध्याय में कहते आए हैं। यदि परमेश्वर ने कुछ प्रकट किया है, तो हमें उस पर विश्वास करना चाहिए और इससे मुद्दा सुलझ जाना चाहिए। परन्तु यह नारा इस तथ्य को नजरअन्दाज कर देता है कि हम परमेश्वर के प्रकाशन को सदा सही रूप में नहीं समझते हैं। केवल हमारे यह सोचने का कि परमेश्वर ने कुछ कहा, यह मतलब नहीं है कि वास्तव में परमेश्वर ने कुछ कहा। अत:, हमें एक गम्भीर प्रश्न पूछना है: हम कैसे इस आत्मविश्वास को विकसित कर सकते हैं कि हमने परमेश्वर के प्रकाशन को सही रूप में समझा है, ताकि हम निश्चय के साथ कह सकें, "परमेश्वर ने यह कहा है, इससे मुद्दा सुलझ जाता है?"

धर्मविज्ञान में आत्मविश्वास के विकास की खोज के लिए, हम तीन बातों को देखेंगे: पहला, हम देखेंगे कि धर्मवैज्ञानिक आधारों में आत्म-विश्वास का एक श्रेणीगत गुण है; दूसरा, हम देखेंगे कि कैसे भरोसा साधारणत: सम्मान की प्रक्रिया से उत्पन्न होता है; और तीसरा, हम देखेंगे कि हमें विभिन्न धर्मवैज्ञानिक आधारों पर भरोसे में उचित सन्तुलन की स्थापना कैसे करनी चाहिए। आइए पहले हम इस विचार को देखें कि धर्मवैज्ञानिक निष्कर्षों में भरोसे का एक श्रेणीगत गुण है, न कि दोहरा।

श्रेणीगत गुणवत्ता

दो साधारण प्रकार के बिजली के स्विच का रूपक इस अन्तर को समझने में हमारी सहायता करता है। बिजली को बन्द और शुरू करने वाले एक साधारण स्विच को दोहरे जोड़े के रूप में माना जा सकता है। यह बिजली के प्रवाह को बन्द या शुरू करता है। बहुत से सुसमाचारिक मसीही अपने विश्वासों के बारे में इसी बिजली के स्विच के समान सोचते हैं।

वे अक्सर केवल उन बातों के बारे में सोचते हैं जिन्हें वे जानते हैं तथा जिन्हें नहीं जानते हैं। "मैं विश्वास करता हूँ कि मसीह परमेश्वर का पुत्र है।" "मैं विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर त्रिएक है।" ये पुष्टियाँ दृढ़ विश्वास हैं। फिर भी, सुसमाचारिक मसीहियों के पास ऐसी बातों की सूचियाँ हैं जिन्हें वे ज्ञात या अज्ञात मानते हैं। "मैं नहीं जानता कि एक भला परमेश्वर बुराई की अनुमति कैसे देता है?" "मैं नहीं जानता मसीह कब लौटेगा।" इस प्रकार के कथन इंगित करते हैं कि हम नहीं जानते कि हम क्या सोचें; इन विषयों पर लिए गए आधारों पर हमें कोई भरोसा नहीं है। धर्मवैज्ञानिक विश्वासों के बारे में यह दोहरी पहुँच कई परिस्थितियों में पर्याप्त होती है। यह कहना एक संक्षिप्त-लिपि के समान है कि "मैं इसके बारे में जानता हूँ, परन्तु उसके बारे में नहीं जानता।" फिर भी, जब हम नजदीक से उन बातों की पूरी श्रृंखला को देखते हैं जिन्हें मसीहियों के रूप में हम जानते हैं तथा नहीं जानते, तो हमें जल्द ही पता चलता है कि स्थिति दोहरे मॉडल के सुझाव से कहीं ज्यादा पेचीदा है।

हम में से अधिकांश लोग प्रकाश की तीव्रता को कम-ज्यादा करने वाले स्विच से परिचित हैं, जिनमें प्रकाश को कम या ज्यादा करने की व्यवस्था होती है। इस प्रकार का स्विच श्रेणीगत है। बिजली

का प्रवाह बन्द या चालू नहीं है, बल्कि विद्युत का प्रवाह कम या ज्यादा होता है। दोनों सिरों पर विद्युत बन्द या चालू होती है, परन्तु बीच की पूरी श्रृंखला भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि उसी के कारण कम या ज्यादा रोशनी प्राप्त होती है।

कई प्रकार से, ये श्रेणीगत बिजली के स्विच हमें उस आत्मविश्वास का अनुमान लगाने के लिए एक बहुत ही सहायक मॉडल उपलब्ध कराते हैं जो विभिन्न धर्मवैज्ञानिक आधारों के बारे में हमें होना चाहिए। ऐसा नहीं है कि कुछ विश्वासों पर हमारा भरोसा है और दूसरों पर नहीं; हमारे पास धर्मवैज्ञानिक आधारों पर कम या ज्यादा आत्मविश्वास की एक पूरी श्रृंखला है।

धर्मविज्ञान से बाहर की बातों को सोचने की हमारी रीतियों के बारे में सोचें। प्रत्येक व्यक्ति बहुत सारे विश्वासों को रखता है। उदाहरण के लिए, मेरा विश्वास है कि आज वर्षा नहीं होगी। मेरा यह विश्वास भी है कि मेरा काम एक सेमिनारी के प्राध्यापक के रूप में है। और मेरा विश्वास है कि मेरी एक पोती है। अब, यद्यपि मैं कह सकता हूँ कि मेरा विश्वास है कि ये सारी बातें सत्य हैं, परन्तु इन विश्वासों के बारे में मेरे भरोसे का स्तर एक समान नहीं है।

मेरे आत्मविश्वास को जाँचने का एक तरीका यह पूछना है कि इनमें से प्रत्येक विश्वास को त्यागने के लिए कितने दबाव की जरूरत होगी। मैं ईमानदारी से कह सकता हूँ कि मुझे आज वर्षा न होने के अपने विश्वास को बदलने के लिए ज्यादा दबाव की जरूरत नहीं होगी। मेरे सिर पर गिरने वाली बरसात की कुछ बूँदें मुझे भागने पर मजबूर कर देंगी; यहाँ तक कि बरसात की भारी संभावना वाली मौसम विभाग की सूचना मुझे छाता लाने पर मजबूर कर देगी। उस विश्वास पर मुझे ज्यादा भरोसा नहीं है। परन्तु सेमिनारी के प्राध्यापक होने के अपने आत्मविश्वास को मैं ऊँचे स्तर पर रखूँगा। मुझे हर तरह से विश्वास है कि शिक्षण की मेरी नौकरी सुरक्षित है, और मेरा यह विश्वास बहुत गहरा है। मेरा यह विश्वास केवल दूरदर्शन की किसी सूचना से नहीं बदल सकता। एक पत्र प्राप्त होने पर भी, मैं इसकी व्यक्तिगत रूप से पुष्टि करना चाहूँगा। परन्तु ध्यान दें कि एक पोती होने के मेरे विश्वास को कैसे रोका जा सकता है। बहुत कुछ है जो मेरे विश्वास की पुष्टि करता है, और वह मुझे इतनी अधिक प्रिय है कि मुझे अपने इस विश्वास से रोकने के लिए इस सूची में वर्णित शेष सभी बातों से कहीं अधिक अकल्पनीय मात्रा में प्रमाण की आवश्यकता होगी।

अब, आमतौर पर जो सामान्य अनुभव में सत्य होता है वह धर्मविज्ञान में भी सत्य होता है। अपने धर्मवैज्ञानिक विश्वासों पर हमारे भरोसे का परिमाण अलग-अलग है। पूर्व के एक अध्याय में हमने बात की कि मसीही सिद्धान्त, व्यवहार और कारूणिकता पारस्परिक संबंधों के एक जाल को बनाते हैं। इस बिन्दु पर हमें इस मॉडल को थोड़ा विस्तार देने की जरूरत है। पारस्परिक संबंध के इस जाल के एक वृहद् क्षेत्र में होने की बात को सोचना सहायक है। इस क्षेत्र को विभाजित करके इसके अन्दरूनी हिस्से को प्रकट करने पर, हम देखते हैं कि विश्वासों का हमारा जाल वृत्ताकार परतों में व्यवस्थित है।

बाहरी परत में हमारे विश्वास खुले रूप में व्यवस्थित हैं। बाहरी परत उन बहुत से धर्मवैज्ञानिक आधारों का प्रतिनिधित्व करती है जो हमारे विश्वासों के जाल की सतह से संबंधित हैं। उन पर हमारा भरोसा कम है; उनके प्रति हमारा समर्पण कम है और हम विश्वासों की इन व्यवस्थाओं को आसानी से और लगभग हर समय बदलते, हटाते, और जोड़ते रहते हैं।

केन्द्र में, या मुख्य भाग में, हमारा विश्वासों का जाल इतनी मजबूती से गुँथा हुआ है कि यह लगभग एकीकृत ठोस प्रतीत होता है। हमारे जाल का केन्द्र मुख्य विश्वासों, हमारे विश्वास की केन्द्रीय धर्मवैज्ञानिक व्यवस्थाओं से निर्मित है, जिसे हम उच्च स्तर के आत्मविश्वास से पकड़े रहते हैं। इन मुख्य विश्वासों में सुधार करना, हटाना या जोड़ना बहुत मुश्किल है। क्योंकि ऐसा करने पर, एक नाटकीय प्रभाव उत्पन्न होता है जो हमारे शेष विश्वासों में बड़ा परिवर्तन ला देता है।

अन्त में, मुख्य और बाहरी परत के बीच कम या ज्यादा मजबूती से आपस में जुड़े विश्वास के जालों से बनी परतों की श्रृंखला होती है। केन्द्रीय भाग के निकट की परतें घने रूप में जुड़ी होती हैं और

उनमें सुधार करना बहुत मुश्किल होता है। केन्द्र से दूर की परतें कम घनी होती हैं और उनमें बदलाव करना कम मुश्किल होता है।

विश्वासों के जाल की व्यवस्था व्यक्ति, परम्परा, और समय तथा स्थान के अनुसार अलग-अलग होती है। फिर भी, प्रत्येक मसीही धर्मविज्ञान में आत्मविश्वास के विविध स्तर प्रकट होते हैं। मसीहियों के रूप में हम कई बातों पर विश्वास करते हैं, परन्तु हमें उन सब पर एक समान भरोसे के साथ विश्वास करने की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। कुछ विश्वास बाहरी किनारे पर होते हैं, कुछ केन्द्र में, और शेष सभी कहीं बीच में। यह सर्वदा कम या ज्यादा आत्मविश्वास का विषय है। जब हम कहते हैं कि धर्मवैज्ञानिक भरोसा श्रेणीगत है तो हमारा यही मतलब है।

विश्वासों के हमारे जाल की यह समझ एक प्रश्न खड़ा करती है: हम किन्हीं विशेष धर्मवैज्ञानिक आधारों को आत्मविश्वास के विविध स्तर कैसे प्रदान करते हैं? किन प्रक्रियाओं के द्वारा हम इस विश्वास पर पहुँचते हैं कि हमने कम या ज्यादा निश्चितता के साथ परमेश्वर के प्रकाशन को सही रूप में समझ लिया है? आसान शब्दों में, सम्मान की प्रक्रिया के द्वारा पवित्र आत्मा हमें सिखाता और क़ायल करता है, यह एक प्रक्रिया है जिसमें हम स्वयं को उन कई उपकरणों के प्रभावों में समर्पित करते हैं जिनका पवित्र आत्मा आमतौर पर हमें सिखाने के लिए उपयोग करता है।

सम्मान की प्रक्रिया

सीधे सम्मान की प्रक्रिया के बारे में बात करने से पहले, हमें उन साधारण तथा असाधारण रीतियों में अन्तर करना चाहिए जिनके द्वारा पवित्र आत्मा हमें धर्मवैज्ञानिक आधारों पर भरोसा देता है। मैंने इन विषयों के बारे में परमेश्वर द्वारा सारी सृष्टि पर नियन्त्रण करने के लिए की जाने वाली क्रियाओं के अनुरूप सोचने को सहायक पाया है।

वेस्टमिन्स्टर विश्वास का अंगीकार परमेश्वर के विधान के बारे में वचन की शिक्षा का अच्छी तरह संक्षेपण करता है। देखें कि यह पाँचवें अध्याय के तीसरे भाग में क्या कहता है:

> परमेश्वर अपने साधारण विधान में, साधनों का उपयोग करता है, फिर भी वह अपनी इच्छानुसार उनके बिना, उनके ऊपर और उनके विरूद्ध कार्य करने के लिए मुक्त है।

ध्यान दें कि परमेश्वर के विधान का यहाँ किस प्रकार वर्णन किया गया है। यह कथन बताता है कि परमेश्वर पृथ्वी पर अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए किस प्रकार द्वितीय कारणों, या रचे गए उपकरणों का प्रयोग करता है। वह साधारण साधनों के "द्वारा" अपनी योजना को साधारण रूप से पूरा करता है; वह अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए रचे गए उपकरणों का प्रयोग करता है। परन्तु साथ ही, परमेश्वर इस साधारण तरीके से बँधा नहीं है। वह रचे गए उपकरणों के बिना, उनके ऊपर और विरूद्ध अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए स्वतन्त्र है।

इसी प्रकार, उन साधारण तथा असाधारण रीतियों के बीच अन्तर करना भी सहायक है जिनके द्वारा पवित्र आत्मा हमें प्रदीप्त करता है और हमारे धर्मवैज्ञानिक आधारों की पुष्टि करता है। समय-समय पर, सभी मसीहियों ने अनुभव किया है कि पवित्र आत्मा हमें उस समय भी अन्तर्दृष्टि तथा मजबूत भरोसा देता है जब हम उनकी खोज नहीं करते हैं। अनपेक्षित रूप से कोई विचार मन में आता है; हमारे अन्दर समर्पण उत्पन्न होता है जिसका हमारे पास कोई स्पष्टीकरण नहीं होता है। इस प्रकार की बहुत सी परिस्थितियों में, पवित्र आत्मा सामान्य तौर पर अपने द्वारा प्रयुक्त द्वितीय कारणों के बिना, उनके ऊपर, और उनके विरूद्ध कार्य करता है। पवित्र आत्मा के ये असाधारण कार्य महत्वपूर्ण हैं, परन्तु औपचारिक धर्मविज्ञान में हम आत्मा द्वारा प्रयोग की जाने वाली साधारण प्रक्रियाओं पर ध्यान देते हैं।

जैसे हम देख चुके हैं, सेमिनारियों में कलीसियाई अगुवों के औपचारिक धर्मवैज्ञानिक प्रशिक्षण के लिए तीन प्राथमिक क्षेत्रों की पहचान करने के द्वारा उन तीन मुख्य रीतियों को अंगीकार किया है जिनके द्वारा आत्मा साधारणत: प्रकाश प्रदान करता है: प्रथम, बाइबल-आधारित वर्गीकरण जो वचन की व्याख्या से संबंधित है; द्वितीय, सैद्धान्तिक एवं ऐतिहासिक वर्गीकरण जो समुदाय में व्यवहार से संबंधित है; और तृतीय, व्यावहारिक धर्मविज्ञान वर्गीकरण जो मसीही जीवन से संबंधित है।

इस बुद्धि के अनुरूप, उन साधारण रीतियों का वर्णन करना बहुत मदद्गार है जिनसे सम्मान या स्वयं को वचन की व्याख्या, समुदाय में व्यवहार और मसीही जीवन के प्रभावों के प्रति समर्पित करने की प्रक्रिया के रूप में आत्मा धर्मवैज्ञानिक आत्मविश्वास प्रदान करता है। हम आगामी अध्यायों में इन प्रभावों का विस्तार से वर्णन करेंगे, परन्तु उनका यहाँ परिचय कराना सहायक है।

सर्वप्रथम, उचित बाइबल-आधारित व्याख्या के प्रभाव को सम्मान देना सीखते समय परमेश्वर का आत्मा प्रदीप्त करता और पुष्टि करता है। व्याख्या का क्षेत्र, उन दक्षताओं को सीखना जिनके द्वारा हम वचन की शिक्षा को परख सकते हैं, प्रदीप्तीकरण और आत्मविश्वास के निर्माण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण, साधारण और प्रभावी साधन है। क्या आप जानना चाहते हैं कि परमेश्वर ने वचन में क्या प्रकट किया है? क्या आप इसके प्रति निश्चित होना चाहते हैं? साधारणत:, हमें व्याख्यात्मक दक्षताओं का प्रयोग करना चाहिए जो हमें बाइबल को जिम्मेदार तरीके से समझने के लिए तैयार करते हैं। मसीही धर्मविज्ञान के विकास की प्रक्रिया में वचन की व्याख्या का सम्मान इतना महत्वपूर्ण है कि हम आगामी अध्यायों में अपना ज्यादातर समय इस क्षेत्र पर विचार-विमर्श में बितायेंगे।

दूसरा, परमेश्वर का आत्मा सामान्यत: हमारे मनों को प्रदीप्त करने और हमारे विश्वास की पुष्टि करने के लिए सामुदायिक मेल-जोल का प्रयोग करता है। प्रत्यक्ष बाइबल-आधारित व्याख्या ही एकमात्र प्रभाव नहीं है जिसकी हमें धर्मविज्ञान में जरूरत है। हमें सामान्य प्रकाशन की सहायता की भी आवश्यकता है, विशेषत: दूसरे लोगों के साथ बातचीत में। वास्तव में, समुदाय के बिना प्रत्यक्ष व्याख्या बहुत खतरनाक है। जैसे हम बार-बार देखते हैं, गलत शिक्षा की ओर पहला कदम अक्सर व्याख्या का होता है। दूसरों से बातचीत, परमेश्वर ने जो प्रकट किया है उसके बारे में उनके विचारों को जानना और मूल्यांकन करना, हमारे धर्मविज्ञान में निर्णायक होना चाहिए। मोटे तौर पर, परमेश्वर ने सम्पूर्ण मानव जाति से बातचीत को हमारी सहायता के लिए नियुक्त किया है, परन्तु विश्वासियों के बीच बातचीत, जहाँ आत्मा अपनी पूर्णता में वास करता है इस प्रक्रिया के लिए विशेषत: महत्वपूर्ण है। समुदाय में बातचीत के समय हम इस प्रकार के प्रश्न पूछते हैं जैसे, "भूतकाल की कलीसिया का इन विषयों के बारे में क्या विश्वास था? मेरे आस-पास के धर्मी विश्वासी इस या उस मुद्दे के बारे में क्या कहते हैं? दूसरों के विचारों की तुलना में मेरे व्यक्तिगत विचार किस प्रकार हैं?" परमेश्वर के प्रकाशन से धर्मविज्ञान के निर्माण की प्रक्रिया में सामुदायिक बातचीत को सम्मान देना इतना अधिक महत्वपूर्ण है कि हम आगामी कई अध्यायों में इस क्षेत्र पर मनन करेंगे।

तीसरा, मसीही जीवन भी हमें इस बात का आत्मविश्वास प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है कि हम आत्मा की अगुवाई में चल रहे हैं। सफलता और नाकामी के अनुभव, प्रार्थनाएँ, आराधना, और परमेश्वर की सेवा जैसी बातें सामान्य प्रकाशन के पहलू तथा वे उपकरण भी हैं जिनका पवित्र आत्मा साधारणत: हमें प्रदीप्त करने और धर्मवैज्ञानिक आधारों के प्रति आश्वस्त करने के लिए प्रयोग करता है। मसीह के लिए जीना हमें बैबले की अच्छी व्याख्या और दूसरों के साथ बातचीत के लिए तैयार करता है। और एक विश्वासयोग्य चालचलन वह क्षेत्र भी है जिसके भीतर हम अपने धर्मवैज्ञानिक आधारों को परखते हैं। हम कौन हैं तथा मसीह के लिए जीने के हमारे अनुभव कैसे हैं, यह तीसरा मुख्य प्रभाव है जिसका हमें सम्मान करना चाहिए। पवित्र आत्मा हमारे मनों को प्रदीप्त करने और हमें इस बात का भरोसा दिलाने के लिए मसीही जीवन का प्रयोग करता है कि हमने परमेश्वर के प्रकाशन को सही रूप में समझ लिया है। इन बातों के अनुरूप, हम इस श्रृंखला के कुछ अध्यायों में मसीही जीवन की जाँच करेंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इस बिन्दु तक, हमने देखा कि धर्मवैज्ञानिक आत्मविश्वास का स्तर अलग-अलग होता है और परमेश्वर का आत्मा हमें आत्मविश्वास देने के लिए साधारणत: व्याख्या, बातचीत और मसीही जीवन के प्रभावों का प्रयोग करता है। अब हम यह देखने की स्थिति में हैं कि हम अपने विभिन्न विश्वासों में आत्मविश्वास के विभिन्न स्तरों में उचित सन्तुलन कैसे लाएँ।

उचित सन्तुलन

इन अध्यायों में हम बार-बार उचित सन्तुलन की विचारधारा पर लौटेंगे, परन्तु मूलभूत विचार का इस बिन्दु पर परिचय देना सहायक रहेगा। उचित सन्तुलन के विश्वासों के कार्य को समझने के लिए मैं एक प्रारूप देना चाहता हूँ। इस प्रारूप को मैं “निश्चितता का शंकु” नाम दूँगा।

कल्पना करें कि हम बाहरी किनारे से अन्दरूनी भाग तक पहुँचने वाले एक शंकु के द्वारा अपने विश्वासों के जाल की परत से एक हिस्सा निकाल दें। इस शंकु को सीधा रखने पर, क्षेत्र की परतें आत्मविश्वास का माप बनाती हैं जिन पर हमारे विभिन्न विश्वास आधारित होते हैं। शंकु का ऊपरी हिस्सा हमारे मुख्य विश्वास हैं; शंकु का निचला हिस्सा हमारे विश्वासों का बाहरी किनारा है। ऊपरी और निचले हिस्से के बीच में वे विश्वास हैं जिन पर हमारे भरोसे का स्तर अलग-अलग है।

मसीही धर्मविज्ञानियों के रूप में हमारी एक मुख्य जिम्मेदारी यह निर्धारित करना है कि हम अपने विशिष्ट विश्वासों को किस स्तर पर रखें। किसी धर्मवैज्ञानिक आधार का मसीही विश्वास से संबंधित होना निर्धारित होने के बाद, हम जानना चाहते हैं कि उसे निश्चितता के शंकु में कहाँ रखना चाहिए। क्या यह ऊपरी हिस्से की ओर होना चाहिए, जिसे आत्मविश्वास के ऊपरी स्तरों पर रखा जाए? या क्या यह निचले हिस्से की ओर होना चाहिए, जिसे आत्मविश्वास के निचले मापदण्ड पर रखा जाए?

इस बात में कोई सन्देह नहीं कि पवित्र आत्मा कई बार असाधारण रीतियों से हमारे अन्दर आत्मविश्वास के स्तर प्रदान करता है। हम किसी बात के प्रति पूरी तरह क़ायल हो जाते हैं जो न्यायोचित न लगे। हम किसी विचार पर सन्देह कर सकते हैं लेकिन बता नहीं सकते क्यों। कई बार हमें बस महसूस होता है कि कुछ सही या गलत है। हमें इस प्रकार के अनुभवों के प्रति सावधान रहना चाहिए और उन्हें परमेश्वर के वचन की जाँच के लिए समर्पित करना चाहिए, परन्तु आत्मा के इन असाधारण कार्यों को अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए।

परन्तु वह साधारण तरीका क्या है जिसके द्वारा पवित्र आत्मा हमारी यह निर्धारित करने में अगुवाई करता है कि निश्चितता के शंकु में हम अपने विश्वासों को कहाँ रखें? सामान्य शब्दों में, हम कह सकते हैं कि बहुत विरल अपवादों के साथ, हमें अपने आत्मविश्वास के स्तरों को व्याख्या, बातचीत और मसीही जीवन के प्रति विश्वासयोग्य सम्मान के परिणामों के अनुरूप सन्तुलित करना चाहिए। उनके प्रभावों के अधीन होने की खोज करने पर, पवित्र आत्मा हमारे विश्वासों को उचित सन्तुलन में लाता है।

अब, व्यावहारिक स्तर पर, व्याख्या, बातचीत और मसीही जीवन के प्रभावों को सम्मान देना हमसे कम से कम दो मूलभूत प्रश्न पूछने की माँग करता है: पहला, किसी विशेष विषय पर व्याख्या, समुदाय में बातचीत और मसीही जीवन के बीच कितना सामंजस्य है? जितना अधिक सामंजस्य होगा, उतना ही अधिक हमारे अन्दर आत्मविश्वास होना चाहिए कि हमने किसी विशेष बात को सही रूप में समझ लिया है। दूसरा प्रश्न इस प्रकार हो सकता है: महत्वपूर्ण असामंजस्य की स्थिति में, एक प्रभाव दूसरे की तुलना में कितना भारी है? एक या दो प्रभावों का भार ज्यादा होने पर, हम में इस प्रभाव को निश्चितता के शंकु में ऊँचे पर रखने की प्रवृत्ति होती है। व्याख्या, बातचीत और मसीही जीवन के प्रभावों के असामंजस्यपूर्ण और भार में बराबर होने पर, हम में इस विश्वास को निश्चितता के शंकु में निचले स्तर पर रखने की प्रवृत्ति होती है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अब, यह बात स्पष्ट होनी चाहिए कि उचित सन्तुलन के कार्य को करने की कोई निश्चित विधि नहीं है; कोई गणितीय गणना नहीं है। यह प्रक्रिया विज्ञान की बजाय कला अधिक है, और इस कार्य को करते समय हमें निरन्तर परमेश्वर की आशीषों की खोज में रहना चाहिए। फिर भी, सम्मान की प्रक्रिया वह पथ है जिसके द्वारा आत्मा साधारणत: अपने लोगों को चलाता है। स्वयं को व्याख्या, सामुदायिक बातचीत और मसीही जीवन के प्रभावों में शामिल करते समय, आत्मा निश्चितता के शंकु में हमारे विश्वासों के उचित सन्तुलन के लक्ष्य की ओर हमारी अगुवाई करेगा।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने देखा कि मसीही धर्मविज्ञान का निर्माण करते समय कैसे परमेश्वर के प्रकाशन पर निर्भर हों। हमने देखा कि परमेश्वर ने हमें विशेष और सामान्य प्रकाशन दिया है; अत: हमें सृष्टि और वचन में दिए गए परमेश्वर के प्रकाशन पर एक साथ भरोसा करना चाहिए। हमने यह भी देखा की प्रकाशन को समझने में पाप के प्रभावों के कारण रूकावट आती है, लेकिन पवित्र आत्मा का प्रदीप्तीकरण उसे आगे बढ़ाता है। और अन्त में, हमने देखा कि व्याख्या, समुदाय में बातचीत और मसीही जीवन हमें यह निर्धारित करने में सहायता करते हैं कि हमारे धर्मवैज्ञानिक विश्वासों के लिए आत्मविश्वास का उचित स्तर क्या है।

ये विचारधाराएँ आगामी परियोजना के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इनको ध्यान में रखने पर ही हम परमेश्वर के प्रकाशन पर आधारित धर्मविज्ञान के निर्माण के लक्ष्य तक पहुँच सकेंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।